आजादी

आजादी⇨ आ– आनंदित, जा– जायदाद, दी– दीवार

अर्थात् आनंदित जायदाद की दीवार। आजादी का शाब्दिक अर्थ होता है आनंद देने वाली जायजाद की दीवार। जिसके अंदर धर्म, सभ्यता, संस्कृति अभिव्यक्ति स्वतंत्र हो। जीवन आनंदित उस समय रहता है जब जायजाद स्वतंत्र हो, जायदाद स्वतंत्र उसी समय रहती है जब प्रबल इच्छाशक्ति दीवार उसकी रक्षा कर रहा हो। यहां पर आनंदित का तात्पर्य खुशहाली से है। जायजाद का तात्पर्य मातृभूमि से है और दीवार का तात्पर्य इच्छाशक्ति से है। वह आजाद है जो आनंदित शरीर रूपी जायजाद इच्छाशक्ति रूपी दीवार से सुरक्षित है। जिन अमर सपूतों ने आजादी दिलाई वे उस समय भी आजाद थे। उनका शरीर रूपी जायजाद प्रबल इच्छाशक्ति रूपी दीवार से सुरक्षित था। इनके ऊपर विदेशी हुकूमत कभी शासन नहीं कर पाई। आजाद रहते हुए अपनी मातृभूमि की आजादी के लिए लड़ते रहे। लड़ते–लड़ते शहीद हो गए। ऐसे महापुरुषों को बारंबार प्रणाम। इनके शहीद होने के बाद भी इनकी आजादी की प्रबल इच्छाशक्ति आजाद रही। यही प्रबल इच्छाशक्ति रूपी खुशबू लोगों के अंदर प्रवेश की और आजादी की लड़ाई जारी रही। जब महात्मा गांधी जी का नेतृत्व मिला तो जनता की इच्छाशक्ति और प्रबल हो गई। गांधी जी के नेतृत्व में संगठित रूप से लड़ाई चलती रही। धीरे–धीरे आम जनता की इच्छाशक्ति जुड़ती रही। जब अधिकतम लागों की इच्छाशक्ति रूपी दीवार खड़ी हो गई तब विदेशी हुकूमत करने वालों की इच्छाशक्ति कमजोर पड़ने लगी और भारत की हुकूमत छोड़कर भारतीयों के हाथ सत्ता सौंपकर वापस जाने का भाव उत्पन्न हो गया। 15 अगस्त 1947 की वह शुभ घड़ी आ गई जब अपना देश आजाद हो गया। उस पल तिथि को बारंबार नमन जिस घड़ी में देशवसियों को आजादी मिली।

आजाद देश वही है जहां की मातृभूमि में पैदा होने वाले सपूत अपने देश की सत्ता संभालते हुए धर्म, संस्कृति, सभ्यता, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की रक्षा करते हुए व्यवस्था सुरक्षा और न्याय को जन सामान्य तक पहुंचाए। अपना देश सदैव आजाद रहे। इसके लिए जन सामान्य परिवार, जाति, क्षेत्र और धर्म में अपने आप को न बांटते हुए देश हित के बारे में सोचे। शुभ सकारात्मक भाव हमेशा सोचते रहे। उनके द्वारा छोड़ा गया यही भाव राष्ट्र के चारों तरफ सुरक्षा दीवार बना लेगा। यही दीवार किसी नकारात्मक सोच को देश में प्रवेश करने से रोक देगी। ईट, गारे की बनाई गई दीवार व्यक्ति को रोक सकती है, उसकी सोच को नहीं रोक सकती है। यदि सोच अच्छी नहीं है तो व्यक्ति दीवार गिराकर प्रवेश कर सकता है। पर भावना द्वारा बनाई गई दीवार से ऐसी ऊर्जा निकलती रहती है जो गलत सोच नही बनने देती है। एकता के साथ अधिकतम लोगों द्वारा यदि एक ही भाव छोड़ा जाए तो उससे लड़ने की हिम्मत विरोधी के अंदर नहीं पैदा हो पाती है। दृढ़ इच्छाशक्ति द्वारा छोड़ा गया भाव एक शक्ति है, एक ऐसी शक्ति जिसका भेदन कोई नहीं कर सकता है। शक्ति शरीर में नहीं इच्छा में होती है। इसे कभी कमजोर नहीं होने देना चाहिए। इस समय देश मे सबसे अच्छा तंत्र प्रजातंत्र है, इससे अच्छी कोई व्यवस्था नहीं हो सकती है जिसका निर्माण जनता द्वारा हो रहा हो। वर्तमान समय में व्यवस्था बदलने की जरूरत नहीं व्यक्ति बदलने की है। कोई भी व्यवस्था आदर्श राष्ट्र की स्थापना तब तक नहीं कर सकता जब तक व्यक्ति अच्छा न हो। व्यक्ति भी बदलने की जरूरत नही बल्कि व्यक्ति को बदलने की जरूरत है। व्यक्ति को अच्छे कार्य करके जनता के दिल को जीतना चाहिए, विपक्ष की बुराई करके नहीं। वर्तमान समय में जो विपक्ष की जितनी अधिक बुराई कर ले उतना ही अधिक खुद को आदर्श बनाने का यह अच्छा तरीका नहीं है। जनता जिसका चुनाव करे उसको अच्छा भाव देकर मजबूत बनाए रखे। ऐसा करने से जिसका चुनाव किया जाता है उसके अंदर हितकारी भाव बना रहता है। जिसके परिणामस्वरूप हितकारी कार्य करते हुए अपराध को रोकने के लिए लड़ता रहता है। ऐसी व्यवस्था ही सदैव आजाद रख सकती है।

कुछ ऐसे विषय होते हैं जो व्यक्ति के व्यक्तिगत जीवन की आजादी में बाधा बन जाते हैं जैसे स्वार्थवादी विचार, परिवार, समाज, किसी के शब्द, किसी की विचारधारा का प्रभाव, किसी के द्वारा किया गया अन्यायपूर्ण कार्य, ऐसे अनेको कारण होते हैं जिससे प्रभावित होकर व्यक्ति अपने आप को अपनी नजर से नहीं उसकी नजर से अपने को देखने लगता है और अपनी आजादी को बाधित कर देता है। जबकि शरीर किसी के बंधन में हो सकता है, पर मन आजाद है। इसे कोई बंधन में नहीं कर सकता है पर व्यक्ति स्वयं उपरोक्त विषयों से प्रभावित होकर मन को उलझा देता है। विषय से पहले शरीर प्रभावित होता है मन नहीं। शरीर को विषय से प्रभावित न होने दिया जाए तो मन आजाद पंक्षी की तरह उद्देश्य के लिए कार्य करता हुआ मंजिल पर पहुंचा देता है। जिनका शरीर विषय से प्रभावित होते हैं वे उद्देश्य कुछ बनाते हैं और पहुंच कहीं और जाते हैं जैसे व्यक्ति अच्छा बनकर देशहित और समाज निर्माण के लिए कार्य करना चाहता है पर विषय से प्रभावित होकर अथवा ठगी का शिकार होने के बाद ठग का ठेकेदार बन जाता है। जबकि मानव के अतिरिक्त प्रकृति के सभी चर–अचर जीव जिस निमित्त पैदा होते हैं उसी गुण को प्रकृति के लिए छोड़ जाते हैं । ये किसी परिस्थिति से प्रभावित होकर अपना उद्देश्य नहीं बदलते। परिस्थिति को विरोधी तत्व की क्रिया मानते हुए आगे बढ़ते हुए मंजिल पहुंचते हैं। मानव को भी अपने उद्देश्य पर दृढ़ संकल्प का चोला पहनकर उद्देश्य की तरफ बढ़ते रहना चाहिए। रुकावटें(परिस्थितियां) स्वतः खत्म होती जाएंगी और मंजिल एक न एक दिन अवश्य मिलेगी। ऐसा करने से स्वयं का, देश का, विश्व का और प्रकृति का विकास होगा।

सभी के लिए आजादी की शुभकामना के साथ...

सम्पादक